आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-69 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | दिसम्बर 2017 - जनवरी 2018 | मूल्य - 5 रूपए

कैसे बचाया जाए बच्चों को यौन शोषण से



बालकनामा ब्यूरो

दिन पर दिन यौन अत्याचारों की संख्या बढ़ती ही जा रही है और शिकार हो रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चे। इस पर एक चर्चा रखी गयी। इस चर्चा में 26 लड़के और 16 लड़कियों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। चर्चा के लिए लड़के और लड़कियों को अलग अलग बैठाया गया। चूंकि यह एक संवेदनशील विषय है, इसलिए पत्रकारों ने बच्चों की पहचान को पूर्णतः गोपनीय रखा गया है। बच्चों ने वर्तमान में हो रही यौन शोषण की घटनाओं को चित्रकला के माध्यम से दशार्या, जिसमें निम्न बातें निकल कर सामने आईं। 14 वर्षीय बालक ने बताया कि जब बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए पार्क में जाते हैं तो बच्चों के साथ वहां यौन शोषण होता है। 15 वर्षीय बालिका ने कहा कि जब हम लड़कियां भीख मांगने के लिए बसों में जाती हैं तो हमें लोग अश्लील नजरों से देखते हैं और कभी कभी बस ड्राईवर व कंडेक्टर हमारा गलत इस्तेमाल करने का भी प्रयास करते हैं। 16 वर्षीय बालक ने कहा कि एक बूढ़ा व्यक्ति है जो बच्चों से जबरन

शेष पृष्ठ 2 पर



यौन शोषण से बचने के उपाय

रिपोर्टर शम्भू

यह कानून बच्चों को अधिकार प्रदान करते हैं। यह कानून यौन शोषित को दस अधिकार प्रदान करता है। जैसे-

1. आपको आपके साथ किए गए दुर्व्यवहार की रिपोर्ट करने का अधिकार है,
2. आपको अधिकार है सुरक्षा का,
3. आपको अधिकार है उन लोगों के खिलाफ आपराधिक शिकायत करने का, जिन्होंने आपको हानि पहुंचायी है,
4. आपको अधिकार है कानूनी कार्यवाही के दौरान विशेष व्यवहार का,
5. आपको अधिकार है मदद पाने का, जिससे कानूनी कार्यवाही आपके लिए आसान हो सके,
6. आपको अधिकार है कानूनी प्रक्रिया के दौरान सुरक्षा पाने का,
7. आपको अधिकार है कानूनी प्रक्रिया के दौरान आपकी गोपनीयता के सम्मान का,
8. आपको अधिकार है मुफ्त चिकित्सा एवं सामाजिक सेवाओं का, जो आपको कानूनी कार्यवाही से पहले एवं उसके दौरान जो

शेष पृष्ठ 2 पर

बाल संसद में बाल अधिकारों पर बच्चों की चर्चा

रिपोर्टर शम्भू

बाल संसद तथा मिनिस्ट्री के सहयोग से 14-20 नवंबर तक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 18 राज्यों के बालसाथियों ने भाग लिया। जैसे दिल्ली, राजस्थान, झारखण्ड, रांची, सिक्किम, पंजाब, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, चंडीगढ़ आदि इन बालसाथियों ने अपने राज्य में हो रही बच्चों की समस्याओं और उनकी दशा पर चर्चा की तथा उनके अधिकारों के बारे में जिक्र किया। इस कार्यक्रम में कुछ सरकारी कार्यकर्ता शी शामिल हुए। महिला बाल विभाग मंत्री डॉ. विनेंद्र कुमार जी, यशवंत जैन (एन.सी.पी.सी.आर) राकेश श्रीवास्तव सेक्रेटरी (एम.डब्लू.सी.डी), अजय त्रिके एडिशनल सेक्रेटरी, आस्था सक्सेना खाटवानी जॉइंट सेक्रेटरी एम.ए इमाम निदेशक (एन.आई.पी.सी.सी.डी) इस कार्यक्रम में शामिल हुए। पहले दिन बाल संसद के बालसाथियों ने चार समूह बनाये जिसके माध्यम से हर एक समूह ने एक अधिकार के ऊपर विस्तार से चर्चा की। बच्चों को चार अधिकार प्राप्त हैं-

1. जीने का अधिकार,
2. सुरक्षा का अधिकार,
3. विकास का अधिकार,
4. भागीदारी का अधिकार। लेकिन अभी भी बच्चे इन अधिकारों से वंचित हैं।

पहले समूह ने जीने के अधिकार पर चर्चा की। जीने के अधिकार में आता है- रोटी, कपड़ा, मकान। लेकिन आज भी काफी ऐसे बच्चे हैं जो सड़क पर भूखे प्यासे रहते हैं। उन बच्चों के रहने के लिए घर नहीं है। वह सड़क तथा रेलवे स्टेशनों पर अपनी जिंदगी व्यतीत कर रहे हैं। दूसरे समूह ने सुरक्षा के अधिकार पर चर्चा की। हमारे समाज में काफी ऐसी लड़कियां तथा बच्चे हैं उनके साथ आये दिन कोई न कोई घटना घटती रहती है लेकिन कोई व्यक्ति उन बच्चों को मदद करने के लिए आगे नहीं बढ़ता है। वह उनकी हालतों की मजाक उड़ाते हैं और बच्चों पर पुलिस भी अत्याचार करती है; जैसे कि जो बच्चे स्टेशन पर कूड़ा-कबाड़ा बीनने के कार्य करते हैं उनके साथ तो आये दिन मारपीट होती रहती है, तो ऐसे में हमारे समाज के बच्चे कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। तीसरे सूमह ने विकास के अधिकार के ऊपर चर्चा की। बच्चों का विकास नहीं हो पा रहा है। जब बच्चे पार्कों में खेलने के लिए जाते हैं, बड़े व्यक्ति उन बच्चों को घृणा की नजरों से देखते हैं व मारपीट कर भगा देते हैं। जो बच्चे स्कूल में पढ़ाई करने जाते हैं, उनके अधिकारों का भी हनन होता है। स्कूल के अध्यापक बच्चों को सही प्रकार से पढ़ाती ही नहीं है। जब कोई सरकारी अधिकारी इनके ऊपर दबाव बढ़ाते हैं तो बच्चों को जबरन होमवर्क कराते हैं। इस परिस्थिति में बच्चों की मानसिक स्थिति कमजोर होने का भय रहता है। इसी प्रकार चैथे समूह ने भागीदारी के अधिकार पर चर्चा की। बहुत सारे बच्चे हैं जिनको अपनी बातों को किसी भी मीटिंग में रखने का मौका नहीं मिलता है। इसी प्रकार बालसाथियों ने इन चारों अधिकरों को पाने के लिए सुझाव भी बताये कि जैसे जो बच्चे स्टेशन पर भूखे पेट रहते हैं, उनके लिए कुछ प्रबंध किए जाएं ताकि सभी बच्चों को भूखा नहीं रहना पड़े। इन सभी मुद्दों पर विस्तार से चर्चा हुई। महिला बाल विभाग मंत्री डॉ विनेंद्र कुमार जी ने बच्चों की पीढ़ा सुनकर बच्चों के हौसले की तारीफ करते हुए कहा कि मुझे गर्व महसूस हो रहा है कि अलग-अलग राज्यों से बच्चे आकर अपनी परेशानियों तथा अपने अधिकार के ऊपर विस्तार से चर्चा किये। आप बच्चे हमारे देश का भविष्य हो। जब चाय बेचने वाला व्यक्ति प्रधानमंत्री बन सकता है, तो मुझे पूरी उम्मीद है कि आने वाले भविष्य में आप बच्चे भी कोई डॉक्टर, इंजीनियर तथा नेता बन सकते हो। बच्चों का उत्साह बढ़ाने के लिए चाइल्ड हेल्फ लाईन के सहयोग से बच्चों को बैंग दिया गया, ताकि बच्चे चाइल्ड हेल्फ लाईन के बारे में और भी विस्तार से जानें और दूसरे बच्चे जो मुसीबत में फंसे हुए होते हैं, उनको मदद कर पाएं। इसी तरह दूसरे दिन भी चित्रकला कार्यक्रम किया। तीसरे दिन रेसिंग कार्यक्रम हुआ। इन सभी कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों में जो फस्टस सैकिन्ड आये उनको डॉ विनेंद्र कुमार के हाथों उपहारों से सम्मानित किया गया। अंतिम दिन अलग-अलग राज्यों से आए हुए बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम पेश किए, जिसको देखकर डॉ विनेंद्र कुमार जी अधिक प्रसन्न हुए।





जापान की मानवाधिकारों के लिए काम करने वाली यू एन सी आर सी (UNCRC) की सदस्य मिकीको ओतनी (MIKIKO OTANI) ने बालकनामा के लिए अपने सन्देश में कहा है :

प्रिय दोस्तों, बालाकनामा सड़क और काम करने वाले बच्चों के लिए बहुत ही अनोखा मंच है जिसके माध्यम से वे अपनी आवाज व्यक्त करते हैं और उनकी आवाजें व्यापक रूप से सुनाई देती हैं। आपके मूल्यवान कार्य के लिए धन्यवाद। मैंने जीवन की स्थितियों, चुनौतियों, इच्छाओं और इन बच्चों की जरूरतों के बारे में बहुत कुछ सीखा, जिन्होंने अपनी कहानियों को बालकनामा में साझा किया है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।



ब्राजील तक पहुंचा संदेश

27 नवम्बर को ब्राजील के साओ पॉउलो नामक शहर में बच्चों के अधिकारों को लेकर एक बैठक की गयी। इस बैठक में बातचीत के लिए विभिन्न देशों के युवाओं को बुलाया गया था। हमें यह बताते हुए बेहद गर्व और खुशी हो रही है कि ब्राजील की इस सभा में बालकनामा के पत्रकार को भी आमंत्रित किया गया था। यद्यपि कुछ व्यक्तिगत कारणों की वजह से पत्रकार इस सभा में नहीं जा सके, जिसका हमें अफसोस है। ''बालकनामा'' की पत्रकार टीम ने सड़क एवं कामकाजी बच्चो के हितों और उनके अधिकारों के लिए आवाज बुलन्द करते हुए एक संदेश भेजा, इसे ब्राजील के पत्रकारों ने अपना संदेश बनाया, वहां उपस्थित युवाओं ने पत्रकारों का संदेश सुना और उसकी सराहना करते हुए स्वागत किया।

कैसे बचाया जाए बच्चों को यौन शोषण से

पृष्ठ 1 का शेष

अपने गुप्तांगों को स्पर्श करवाता है और संभोग करने को मजबूर करता है। अगर कोई बच्चा उस बूढ़े व्यक्ति की बात नहीं मानता है, तो यह बूढ़ा व्यक्ति खुद ही बच्चे के व्यक्तिगत अंगों को स्पर्श करता है तथा बच्चों को यौण शोषण करने के लिए उत्तेजित करने का प्रयास करता है।

16 वर्षीय बालिका बोली कि कुछ अध्यापक भी ऐसे हैं जो लड़कियों को लालच देते हैं कि हमारे साथ यौन संबंध बना लो, मैं परीक्षा में अंक बढ़ा दूंगा, जिससे तुम अधिक अंकों से पास हो जाओगी। ऐसे कामांध व्यक्ति किसी भी पवित्र रिश्ते को पल भर में चूर-चूर कर देते हैं। जब लड़कियां इस प्रकार की बातों की जानकारी अपने माता-पिता को देती हैं तो इनके माता-पिता भी इनकी बातों को अनसुना कर देते हैं। जब माता-पिता ही हमारी बात को तवज्जो नहीं देते हैं तो बच्चे हीनभावना का शिकार हो जाते हैं। इसी के चलते वह इस प्रकार के यौन शोषण को अपनी नियति मान लेते हैं, तथा वह आगे चलकर धीरे-धीरे यौन शोषण को बर्दाश्त करने के आदी होते चले जाते हैं। ऐसी हालातों से गुजरती हुई एक बच्ची ने बताया कि जब हम लड़कियां घर से बाहर निकलती हैं, तो आस-पास के रहने वाले कुछ बड़े व्यक्ति गलत निगाहों से हमें देखते हैं और वह गलत-गलत बातें बोलते हैं जिनको सुनकर हम लड़कियों को बहुत बुरा लगता है शर्मिंदगी महसूस होती है। 14 वर्षीय बालक का कहना है कि रेलवे स्टेशन पर जब नए बच्चे आते हैं तो उनसे बड़े लड़के कहते हैं कि तुम स्टेशन पर तभी रह सकते हो, जब तुम मुझे अश्लील हरकतें करने दोगे। जब वह उनके साथ अश्लील हरकत करते हैं तो उससे पहले वह उस बच्चे को इतना नशा करवा देते हैं कि अश्लील हरकत होते समय बच्चे को दर्द महसूस न हो। उसे पता न हो और वह किसी से यह बात बता न सके। 15 वर्षीय बालक का कहना है कि यह हर जगह होता है सबके साथ होता है यह सच नही हैं। सिर्फ लड़कियों के साथ ही यौन शोषण होता है। सड़क पर रहने वाले लड़कों के साथ भी यह होता है। 14 वर्षीय बालक का कहना है कि परिवार में जो छोटी लड़कियां रहती हैं जब उनके माता-पिता अपने काम के लिए चले जाते हैं तब उनके रिश्तेदार और आस पड़ोस के लोग उस लड़की को अकेला देखकर उसके साथ यौन शोषण करते हैं। इस बारे में जब लड़की अपने माता-पिता को बताती है तो उसके माता-पिता भी अपनी लड़की का यकीन नहीं करते हैं। सिर्फ यह कहकर चुप करा देते हैं कि इस बात को किसी और से नहीं बताना, वरना हमारी बदनामी होगी। घर की इज्जत खराब हो जाएगी। 15 वर्षीय बालक का कहना है कि कुछ लड़के जिनकी भावना पूरी तरह लड़कों जैसी नहीं होती है वह दूसरे लड़कों से अश्लील हरकत करवाने के लिए उकसाते हैं, उन्हें गंदे इशारे करते हैं। अश्लील फिल्म दिखाते हैं। उनके व्यक्गित भागों को छूते हैं तथा पैसों का लालच देते हैं और कई बार उनकी खुद की वीडियां बनाकर उनको ब्लैकमेल करते हैं और उनसे बार-बार अश्लील हरकत करवाते हैं।

15 वर्षीय बालक का कहना है कि जो लड़के कंपनियों में काम करते हैं उनके ठेकेदार उनसे कहते हैं कि अगर तुम मेरे साथ अश्लील हरकत करने के लिए तैयार होते हो तो मैं तुमसे ज्यादा काम नहीं करवाऊंगा और पैसे भी ज्यादा दूंगा। अगर इस बारे में तुमने किसी को बताया तो मैं तुम्हारे ऊपर चोरी का इल्जाम लगा कर पुलिस से पकड़वा दूंगा जिससे तुम्हारी नौकरी भी चली जाएगी और कोई भी व्यक्ति तुम्हारा विश्वास नहीं करेगा। 16 वर्षीय बालक ने बताया कि लड़कों के साथ भी यौन शोषण अलग-अलग प्रकार से किया जाता है जैसे कि छोटे लड़कों के वस्त्र उतार कर उनकी वीडियो बनाकर अपने व्यक्गित अंगों को छोटे लड़कों को स्पर्श करवाकर अश्लील फिल्म दिखाकर दबाव डालकर लालच देकर या अश्लील बातें सुनाकर। 17 वर्षीय बालक ने बताया कि अगर हम यौन उत्पीड़न के मुद्दे को अपने कार्यस्थल पर उठाएंगे, तो हम अपनी नौकरी खो देगें। चेतना और ईसीपीएटी इंटरनेशनल द्वारा भारतीय सामाजिक संस्थान में आयोजित अधिकारों के बिल पर बैठक में सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने उक्त विचार व्यक्त किये।

यौन शोषण से बचने के उपाय



पृष्ठ 1 का शेष

आपको सामना करने में या ठीक होने में मदद करें,

9. आपको अधिकार है प्रक्रिया के बारे में जानकारी पाने का,

10. आपको अधिकार है आप पर किए गये नुकसान की भरपाई का दावा करने का।

यह जानकारी प्राप्त करने के बाद चेतना के कार्यकर्ता श्री भूपेंद्र जी ने एक बच्चा का रोल अदा किया, जिसमें सभी बालसाथियों को श्री भूपेंद्र जी ने बताया कि मेरे साथ यौन शोषण हुआ है। अब मुझे आप लोग किस कानून तथा अधिकारों से इंसाफ दिला सकते हो? सभी बालसाथी ने विस्तार से बताया कि आपके साथ यौन शोषण हुआ तो आपको पूरा अधिकार है आप इसके खिलाफ कानूनी कार्यवाही कर सकते हैं और सरकार का भी यह फर्ज बनता है कि आपको पूरा सहयोग प्रदान करे। बच्चों के साथ हो रहे इस तरह के यौन शोषण की बढ़ती हुई घटनाओं की पीढ़ा को बालकनामा के पत्रकारों ने बाल कल्याण समिति की सदस्य श्रीमती प्रमीला जी तथा मुहम्मद सलाम जी के सामने रखा और इस मुद्दे पर विस्तार से चर्चा की। इस प्रकार की समस्याओं से निपटने के लिए मुहम्मद सलाम जी ने बताया कि समाज का जागरूक होना अत्यंत आवश्यक है। जब हमारा समाज जागरूक हो जाएगा तो इस समस्या से छुटकारा मिल सकता है।

संपादकीय

प्रिय साथियों,
नमस्कार !

हैप्पी क्रिसमस। अलविदा 2017। अलविदा 2017 कहते हुए ''बालकनामा'' का यह 69वाँ अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें बड़ी खुशी हो रही है कि हम एक लंबी यात्रा तय करते हुए वर्ष 2018 में प्रवेश करने की दहलीज पर खड़े हैं। हमें गर्व है अपनी संपादकीय टीम, बाल रिपोर्टर्स, बालसाथियों पर, जो बहुत ही कम शिक्षा की पृष्ठभूमि, सड़कों और झुग्गी-झोपड़ियों में रहने और अल्प संसाधनों के बावजूद अपना अखबार निकाल रहे हैं।

देश की राजधानी दिल्ली सहित देश के लगभग सभी महानगरों, नगरों में अति गरीबी और पारिवारिक संरक्षण, सुविधाओं से वंचित तथा उपेक्षित बच्चे सड़कों पर गुजर-बसर कर रहे हैं, जो शहर के प्रमुख स्थानों पर भीख मांगते, पन्नी बीनते, स्टेशन और चैराहों पर बोतल और कबाड़ा बीनते ढ़ाबों पर काम करते बच्चे हैं। इनके परिवार भी इन्हीं कामों में लगे हैं जो खुले में रात गुजारने को मजबूर हैं। अफसोस जनक है कि स्कूल जाते समय मासूमों के साथ होने वाली छेड़छाड़, माता-पिता की उपेक्षा, काम के स्थान पर अत्याचार, बड़े-नशेड़ियों का दुर्व्यवहार, अध्यापकों तथा सामाजिक भेदभाव की वजह से ये बच्चे शिक्षा से भी दूर होते जा रहे हैं। अपने आप को असुरक्षित महसूस करते हैं। स्कूल तो ज्ञान का पवित्र मंदिर होता है। लेकिन मासूमों के साथ जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं, उन्हें देखकर तो यही कहा जा सकता है कि मासूम स्कूल में भी असुरक्षित हैं।

''बालकनामा'' टीम इन मासूमों की समस्याएं समाज और सरकार तक पहुंचाने तथा इनके अधिकारों की आवाज उठाने के लिए दृढ़संकल्प हैं। सड़क के बच्चों के मामलों को लेकर बाल अधिकार पर काम करने वाली संस्थाएं तो समय समय पर आवाज उठाती रही हैं। पिछले संसदीय सत्र में कई सांसदों- हेमा मालिनी, कोथापल्ली गीता, असदुद्दीन ओवैसी, आलोक संजर, एस. आर. विजय कुमार, अशोक शंकरराव चव्हाण ने भी इनसे संबंधित मसलों पर सवाल उठाये हैं तथा इन बच्चों की गिनती, विकास योजना, आश्रय गृह, नशे और बीमारी की स्थिति तथा उपचार सहित इन्हें आरक्षण दिए जाने की मांग की है।

इन घटनाओं को पढ़-जान कर आपके मन में भी कई सवाल उठ रहे होंगे। आपको भी इन मासूमों की चिंता सताने लगी होगी। आप अपने मन की बात, विचार, सुझाव पत्र, ईमेल के माध्यम से संपादकीय टीम तक पहुंचा सकते हैं। आशा है आपका सहयोग, सुझाव एवं मार्गदर्शन हमें पूर्ववत मिलता रहेगा। हमें उम्मीद और विश्वास है कि आने वाले समय में हमारी टीम अपने काम को और भी अधिक गरमजोशी से करेगी।

संपादकीय टीम

दिल्ली पुलिस का आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

कामकाजी लड़कियों को दिया प्रमाणपत्र एवं धन्यवाद

बातूनी रिपोर्टर गायत्री व रिपोर्टर शम्भू





दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच की ईशा पान्डे के साथ हुई सड़क एवं कामकाजी की सभा में ईशा पान्डे जी ने लड़कियों के लिए आत्म रक्षा प्रशिक्षण का आयोजन किया। सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने परिचर्चा की। इसमें बच्चों ने अपनी समस्या उनके सामने रखी, जो खासकर लड़कियों के मुद्दे थे। उनके साथ किस-किस तरह उनके एरियाज में छेड़छाड़ की जाती है। सुरक्षा को लेकर ज्यादातर लड़कियों ने बातचीत की। इस मुद्दे को उन्होंने बड़ी ही गंभीरता से देखते हुए लड़कियों से वादा किया कि इस इंटरनेशल चिल्ड्रन डे के अवसर पर एक आत्मरक्षा कार्यक्रम का आयोजन करवाएंगे, जिसके माध्यम से यह लड़कियां अपनी आत्मरक्षा खुद कर सकें। दिल्ली पुलिस के सहयोग से इनके ही एरियाज में पांच प्वाईटों पर यह कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम में हर एक प्वाईट पर एक दिन में करीब 40 से 45 लड़कियों ने भाग लिया।

यह कार्यक्रम दिल्ली पुलिस दूवारा लगातार दस दिन तक चला और इस कार्यक्रम में लड़कियों ने बढ़चढ कर हिस्सा लिया, तथा दस दिनों तक आत्मरक्षा ट्रेनिंग में कडी मेहनत की, और जाना सीखा कि बस में छेड़ते हुए लोगों से कैसे अपने आपको सुरक्षित कर सकते हैं, व मार्किट एरियाज में हम अपने आपको कैसे सुरक्षित रख सकते है या फिर आस-पास घूमते व खेलते वक्त कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। यह सब कुछ स्टेप उन्होंने बताए, जिससे हम अपने आपकी सुरक्षा कर सकते हैं, कैसे अपना बचाव करके वहां से भाग सकते हैं। जैसे लोअर पंच। यदि कोई व्यक्ति हमारे व्यक्गित अंगों का स्पर्श करने की कोशिश करता है तो लड़कियां अपना बचाव कैसे कर सकती हैं। इस कार्यक्रम में शामिल हुई सभी लड़कियों को प्रमाणपत्र भी दिया गया। इस प्रमाणपत्र को पाकर सड़क एवं कामकाजी लड़कियों ने दिल्ली पुलिस का तहेदिल से धन्यवाद किया। 15 वर्षीय गायत्री का कहना है कि पहली बार ऐसा हुआ है कि दिल्ली पुलिस ने खास हम सड़क एवं कामकाजी लड़कियों के लिए यह ट्रेनिंग प्रदान की है। हम लड़कियां बहुत खुश हैं। अब हम अपनी रक्षा स्वयं कर सकते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

लावारिस शवों की बदबू से परेशान बच्चे

रिपोर्टर ज्योति



दक्षिणी दिल्ली में बसी एक बस्ती, जो कि एकदम सुनसान जगह में है। इस बस्ती में लगभग 500 झुग्गियां हैं। इसमें ज्यादातर बंगाल व बिहार तथा राजस्थान से आये लोग रहते हैं। ये लोग अपने पालन-पोषण करने के लिए घरों में झाड़ू-पोंछा और कूड़ा-कबाड़ा का काम करते हैं, जिससे इनके परिवार का गुजारा हो पाता है। इन झुग्गियों के पास एक शमशान घाट है जिसमें आए दिन शव को जलाया जाता है और जब भी ऐसा होता है, तो झुग्गी में रहने वाले कुछ बच्चे काफी डरे हुए रहते हैं। बच्चों का कहना है कि जब शव को जलाया जाता है तो उस जलते हुए शव में से बहुत गंदी बधबू आती है जिसकी वजह से हम बच्चे सही रूप में सांस नहीं ले पाते हैं। गंदी बदबू के कारण हम बच्चे खाना-पीना भी सही तरह से नहीं खा पाते हैं। रात को सोते समय भी हम बच्चे इस बधबू के शिकार होते हैं। हमारे माता-पिता झुग्गियों के दरवाजे बंद कर देते हैं और इस गंदी बदबू से बचने के लिए कंबल से पूरे शरीर को ढकने के लिए बोलते है लेकिन यह तरीका अपनाने से भी हम बच्चे इस गंदी बदबू से छुटकारा नहीं पा रहे हैं।

कुछ बच्चों का कहना है कि इस शमशान घाट में कभी-कभी अस्पतालों से ऐसे ही शव लाए जाते हैं जिनकी मृत्यू काफी दिनों पहले हो चुकी होती है, जो शायद लावारिस होते हैं और उसे डिब्बे में पैक करके शमशान घाट में फैंक दिया जाता है। शमशान घाट के आस-पास घूमने वाले जानवर किसी तरह से डिब्बे में पैक हुए मुरदे को बाहर निकाल देते हैं जिसकी वजह से झुग्गी में और बधबू फैलने लगती है। यह बात लगभग एक सप्ताह की है। एक बच्चे ने एक बड़ा सा नीले रंग का डिब्बा देखा। उस डिब्बे के पास चार कुत्ते थे, जो उस शव को बाहर खींच रहे थे। इस विषय में पत्रकार ने बच्चों के माता-पिता से बातचीत की। माता-पिता का कहना था कि हम ऐसी परिस्थिति में कहां जाएं, क्योंकि हम अपने गुजारे के लिए बंगाल से बहलोरपुर आये हैं। यहां पर थोड़ा बुहत काम भी है। अगर हम इस स्थान को छोड़कर गए तो हमारी कमाई का जरिया बंद हो जाएगा और हमें पेट पालने के लिए दरदर भटकना पड़ेगा।

इस संबंध में पत्रकार ने बच्चों से बातचीत की। बच्चों ने सुझाव देते हुए कहा कि अस्पतालों से एंबुलेंस जिन लावारिस शवों को लेकर आती हैं, उन्हें यहां नहीं फेंका जाए। उन शवों का तरीके से अंतिम संस्कार करने की जिम्मेदारी सरकार/प्रशासन को लेनी चाहिए। इससे मानवता का निर्वाह तो होगा ही, साथ ही तरीके से शवों का अंतिम संस्कार होने से क्षेत्रीय वातावरण भी काफी सीमा तक स्वच्छ रहेगा। बदबू भी नहीं होगी और हम बच्चे अपने माता-पिता के साथ यहां चैन से रह सकेंगे।

नाले पर लगे जाली

बच्चों की अपील



बातूनी रिपोर्टर सपना व रिपोर्टर चेतन

महात्मा गांधी कैंप में बच्चों से संबंधित कई प्रकार की समस्याएं पायी गयी हैं। जब पत्रकार ने विजिट के दौरान बच्चों से बातचीत की तो बच्चों ने दो समस्याओं के बारे में बताया। पहली समस्या है कि हमारी बस्ती में शौच की कोई सुविधा नहीं है, इसलिए हम नाले के उस पार शौच करने के लिए जाते हैं। वह नाला काफी खतरानाक है। उस नाले को पार करने के लिए कोई रास्ता नहीं है। हमें इस पार से उस पार जाने के लिए एक मोटी पाईप से गुजराना पड़ता है, जो काफी खतरनाक है। यह पाईप नाले के बीचों-बीच दिया गया है। आजकल ठंड का मौसम चल रहा है और सुबह काफी फॉग होता है जिससे वह पाइप गीला हो जाता है जिसकी वजह से हम बच्चों के पैर फिसलते रहते हैं। हमेशा नाले में गिरने का भय बना रहता है। नाला काफी गहरा है।

दूसरी समस्या है, हमारी बस्ती में खेलने की कोई सुविधा नहीं है। इसलिए हम बच्चे इधर-ऊपर खेलने के लिए भटकते रहते हैं। हमारी बस्ती के आस-पास खेलने के लिए एक पार्क है, उसमें बड़े व्यक्ति शराब तथा गांजा सिगरेट आदि नशा करते रहते हैं और आपस में लड़ाई झगडा.करके शराब की बोतलें भी तोड़ते हैं जिसकी वजह से हम बच्चों को उस पार्क से गुजरने पर हमारे पैर में कांच चुभने की संभावना रहती है। कई बार ऐसा होता भी है। इसलिए हम बच्चे उसी खतरनाक नाले के पास खेलने के लिए जाते हैं।

हाल ही एक घटना घटी थी। एक बच्चा पंतग उड़ा रहा था और उसकी पंतग कट गयी, उसको पकड़ने के लिए वह बच्चा पाईप पर से होकर गुजर रहा था, तभी उसका पैर फिसल गया और वह बच्चा नाले में गिर पड़ा। नाले का पानी तेज रफतार से बहने के कारण वह बच्चा बहता चला गया। काफी लोगों ने मदद करने की कोशिश की, लेकिन कोई कुछ मदद नहीं कर सका। जब इस बात की भनक इस बच्चे के माता-पिता को चली तो इसके माता-पिता रोते हुए पुलिस से मदद मांगने पुलिस चैकी पंहुचे। पुलिस की खोज-पड़ताल करने पर वह बच्चा पंजाबी बाग के पास मिला। बच्चा मर चुका था। इस भय से महात्मा गांधी कैंप में रहने वाले सभी बच्चे डर के खौफ में जी रहे हैं। इसलिए बच्चों ने अपने सुझाव रखते हुए कहा कि हम बच्चे चाहते हैं कि इस नाले पर जाली लगा दी जाए, ताकि हमें इस समस्या से छुटकारा मिल सके।

आखिर हमारे साथ ऐसा क्यों ?

बालकनामा ब्यूरो

सड़क पर रहने वाले बच्चों की दशा इतनी खराब होती जा रही है कि नाले तथा जहां लोग अपने घर का बचा हुआ खाना, जो वासी होता है, उसे वह गाय और कुत्तों को खाने के लिए सड़कों पर डालते हैं, उस स्थान से ये बच्चे उठाकर अपना पेट भरते हैं। आईए विस्तार से जानते हैं। जब पत्रकार ने पश्चिम दिल्ली में विजिट किया, तो कुछ ऐसे बच्चे मिले, जो गाय खाना खा रही थी, उसमें से खाना उठाकर बच्चे खुद खा रहे थे। इस संबंध में पत्रकार ने जब बच्चों से बातचीत की कि आप यह खाना क्यों खा रहे हो, तो उस बच्चे ने बताया कि हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं कि हम अच्छा खाना खरीद कर खा सकें। बच्चों ने अपनी पीढ़ा बताते हुए कहा कि अच्छा खाना खाने के लिए हम बच्चों ने खुद मेहनत करनी शुरू की थी, लेकिन कुछ नहीं हुआ। भूतकाल में हम बच्चे कबाड़ा बीनने के लिए सात-आठ बच्चों का समूह बनाकर एक साथ जाते हैं ताकि हम पर कोई आपत्ति नहीं आए, लेकिन दुख की बात यह है कि हम बच्चों को बड़े व्यक्ति जो नशीले पदार्थों में लिप्त होते हैं, वह हमारा सारा कबाड़ा छीन लेते थे जिसका खामियाजा हम मासूमों को भुगतना पड़ रहा था। हमारे हाथ में कुछ नहीं रहता था।



इसलिए हम बच्चे यह फेंका हुआ खाना खाते हैं। आजकल भी हम बच्चे चोरी छुपे कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं, पर उन व्यक्तियों का हमेशा डर लगा रहता है कि कहीं फिर से सारा कबाड़ा न छीन लें। इन बच्चों से दूसरी जानकारी मिली कि इन बच्चों के रहने के लिए कोई सुविधा नहीं है। यह पूरे दिन इधर-उधर कड़ी मेहनत करने के बाद भी रात को सोने के लिए दरदर भटकते हैं।

बच्चों ने बताया कि एक रैन बसेरा है भी, उस रैन बसेरे में बच्चों का रहना मना है। उस रैन बसेरे में वह बच्चे रह सकते हैं जिनके माता-पिता हैं। काफी गुजारिश करने के बाद इनको रहने दिया जाता है लेकिन रैन बसेरे में रहने वाले लोग इनको घृणा की नजरों से देखते हैं। इसलिए बच्चे चाहते हैं कि हमारे लिए कुछ बंदोवस्त किया जाए, ताकि हम बच्चों को खाने तथा रहने के लिए दरदर भटकना नहीं पड़े। हम बच्चे भी देश की संतानें हैं। हमें भी रहने-खाने-पढ़ने की सुविधाएं मिलनी चाहिए, ताकि हम इस नारकीय जीवन से निकल कर अच्छी जिंदगी जी सकें।

पुल के नीचे पार्क बनने से बच्चे हुए प्रभावित

रिपोर्टर दीपक

दक्षिण दिल्ली तथा पश्चिम दिल्ली में देखा गया है कि जो बच्चे अपने परिवार के साथ फ्लाईओवर के नीचे गुजर-बसर कर रहे थे, उनको उस फ्लाईओवर से हटा कर पार्क बना दिया गया है। इस विषय पर बालकनामा का पत्रकार उन बच्चों से मिला, जो फ्लाईओवर के नीचे लगभग दो-तीन साल से रह रहे थे। इन बच्चों से बातचीत करने पर पता चला कि इनको इस बात की भनक भी नहीं थी कि एक दिन ऐसा आ जाएगा कि इस फ्लाईओवर के नीचे से भी भागना पड़ेगा। बच्चों के माता-पिता ने अपनी पीढ़ा को बताते हुए कि कहा कि हमारे परिवार बहुत गरीब हैं, इसलिए हमलोग अपने गांव से दिल्ली शहर में आकर बस गए, ताकि



इस गरीबी से झुटकारा मिल सके। लेकिन हमें क्या पता था कि हम सभी को दिल्ली से भी भगा दिया जाएगा। वर्तमान में काफी बच्चे इस घटना का शिकार हो चुके हैं। इस परेशानी की वजह से कड़ाके की ठंड में भी बच्चे अपने माता-पिता के साथ खुले आसमान के नीचे को मजबूर हैं जिससे इन बच्चों की दशा दिन पर दिन बिगड़ती ही जा रही है। माता-पिता का कहना है कि एक तो गरीबी और दूसरी ठंड का मौसम। ऐसे में हम अपने बच्चों को लेकर कहां जाए ? क्योंकि शाम होते ही इतना फॉग पड़ता है कि हमारे पास जो वस्त्र हैं वह भी गीले हो जाते हैं। बच्चों के माता-पिता ने अपने सुझाव रखते हुए कहा कि हम सभी यही चाहते हैं कि सरकार हमारे साथ इस तरह का व्यवहार नहीं करे। हमें बहुत खुशी हो रही है कि सरकार दिल्ली शहर को हरा-भरा बनाना चाहती है लेकिन सरकार को हम गरीबों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को भी निभाना चाहिए। सरकार हमारे रहने-ठहरने के लिए उचित प्रबंध करे, ताकि हम सभी लोगों को कोई कष्ट ना हो।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।



क्या आप सुनेंगे, इन पीडित बच्चों की आवाज़ें?

बालकनामा ब्यूरो

फुटपाथ तथा झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चों ने एक विषेष बात बताई कि जहां हम बच्चे रह रहे हैं, वहां पर एक भी शौचालय नहीं है जिसके कारण हम बच्चों को शौच करने के लिए दरदर भटकना पड़ता है। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) करन ने बताया कि हमारे आस-पास कुछ प्राईवेट शौचालय बने हैं, उसको इस्तेमाल करने में बहुत पैसे लगते हैं। इसलिए हम बच्चे उस शौचालय का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, इस कारण हम जंगल तथा खुले में शौच करने के लिए जा रहे हैं। लेकिन जंगल तथा खुले में शौच करने में हम बच्चों को बहुत परेशानियों का समाना करना पड़ रहा है। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कंचन ने बताया कि अभी हाल ही में एक घटना घटी है कि एक लड़की जिसका नाम गुप्त रखा गया है वह शाम के करीब सात बजे शौच करने के लिए जंगल में गई थी, तो उस जंगल में एक व्यक्ति पहले से ही छुपा हुआ था, जैसे ही वह लड़की शौच करने बैठी, तो वह उस लड़की को देखकर हस्तमैथुन करने लगा। उसके अगले तीन मिनट बाद दूसरी लड़की जब शौच करने के लिए गई तो उसको पकड़ कर संभोग करने की कोशिश करने लगा। जब वह लड़की चिल्लाई और आस-पास रहने वाले लोग दौड़कर आए और उस बच्ची की मदद की तब वह बच सकी। बच्चों ने यह भी कहा कि यह तो एक स्थान की बात है दिल्ली में काफी ऐसे स्थान हैं जहां पर इस तरह का काम हो रहा है लेकिन हम आप से क्षमा चाहते हैं, हम उन स्थानों का नाम जिक्र नहीं कर सकते हैं, क्योंकि उन स्थानों का नाम बताना वहां पर रहने वाले बच्चों के लिए हानिकारण साबित हो सकता है। आपने बालकनामा के कई अंकों में देखा होगा कि हम बार-बार शौच के बारे में आपसे जिक्र कर रहे हैं। इसके पीछे हमारा एक ही मकसद है कि आप इसे पढ़कर संज्ञान लें, ताकि इन पीडित बच्चों को इस समस्या से मुक्ति मिल सके।

सांपों के भय के साये में बच्चों की शौचालय की मांग

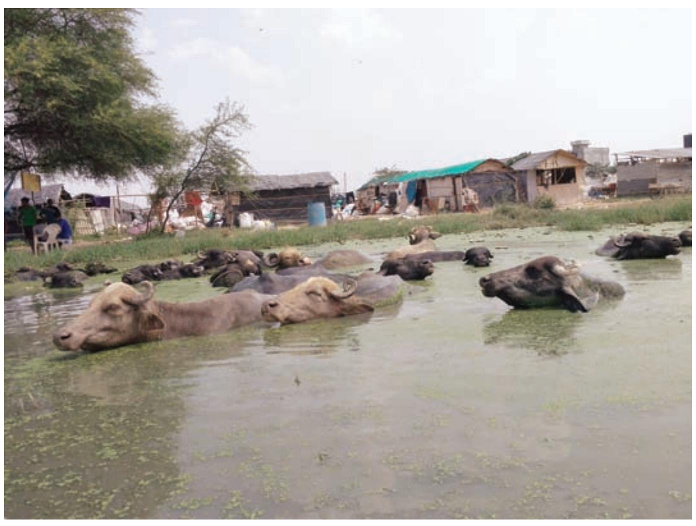
बातूनी रिपोर्टर रज़ीना व रिपोर्टर शम्भू



नोएडा के कुछ विषेष स्थान का पत्रकार ने दौरा किया इस दौरान पत्रकार ने जाना कि नोएडा में रहने वाले बच्चे तथा काम करने वाले बच्चे किस मुसीबत से जूझ रहे हैं ? आइए इस विषय पर विस्तार से जानते हैं। इसे पढ़कर आप भी दंग रह जाएंगे। यह बात सरफाबाद व आम्रपाली की है। इन दोनों स्थानों पर लगभग सात सौ से भी अधिक संख्या में टीन का चद्दर की झुग्गी-झोपड़ी बनी हुई है। इन झुग्गियों में बच्चे अपने माता-पिता के साथ गुजर-बसर कर रहे हैं। जिन स्थानों पर इन्होंने झुग्गी-झोपड़ी बनाए हुई हैं, यहां पहले कभी जंगल हुआ करता था। मजदूरों ने उस जंगल की साफ-सफाई करके झुग्गियां बनाई हैं, तब से लोग इन झुग्गियों में रहते आ रहे हैं। चौंकाने वाली बात यह कि अभी भी इस स्थान पर जंगल है। जितने स्थान में झुग्गियां बनी हुई हैं, सिर्फ उतना स्थान ही साफ-सुथरा पाया जाता है, बाकी स्थान में झुग्गियों के पीछे जंगल तथा खेत हैं। इस जंगल में भारी संख्या में जहरीले सांप पाए जाते हैं। 12 वर्षीय अर्जुन का कहना है कि हमारी झुग्गी के अंदर भी सांप आ जाते हैं। इन सांपों से हम बच्चों को बहुत भय लगता है। कहीं ऐसा ना हो कि यह सांप हम बच्चों पर भारी पड़ जाएं। दूसरी ओर पिंकी का कहना है कि हम सभी बच्चों की झुग्गी टीन की चद्दर की बनी हुई हैं, सांप को जैसे ही थोड़ी-बहुत जगह मिलती है, वह हमारी झुग्गियों के अंदर प्रवेश कर जाते हैं। इससे हम बच्चों को भय लगता है कि कही हमारे खाने-पीने के पदार्थ में सांप नहीं चले जाएं। क्योंकि हमारे माता पिता जो खाना-पीने का पदार्थ बनाते हैं वह नीचे ही रखते हैं। 14 वर्षीय नोबीयून का कहना है कि हमारी झुग्गी में शौचलय की सुविधा भी नहीं है, इसलिए हम बच्चे व हमारी झुग्गियों के हर एक सदस्य शौच करने के लिए रात को इसी जंगल में जाते हैं, क्योंकि दिनभर लोग इधर-उधर घूमते रहते हैं। इसी समस्या से जूझते हुए रात को काफी अंधेरा होने के बाद भी शौच करने को हम लड़कियां तथा हमारी माताएं-बहनें निकलती हैं। इसलिए हम सभी को भय लगा रहता है कि कहीं शौच करते समय सांप हमें काट न ले। इसलिए हम लड़कियां चाहती हैं कि हमारी झुग्गियों के पास डिब्बे वाला (अस्थाई) शौचालय ही लगा दिया जाए, ताकि हम सभी बच्चों को इस समस्या से छुटकारा मिल सके।

कैसे करें, इस गंदगी का सामना?





बातूनी रिपोर्टर नोबीयून व रिपोर्टर शम्भू

नोएडा सैक्टर 76 में बसी एक बस्ती जिसे सरफाबाद के नाम से जाना जाता है। इस बस्ती के आस-पास बहुत गंदगी होने के कारण मक्खियां तथा बदबू के शिकार हो रहते हैं बच्चे। क्योंकि इस स्थान पर लगभग 300 सौ भी अधिक झुग्गी झोपड़ियां हैं। इन झुग्गियां में रहने वाले कुछ व्यक्ति जो कूड़ा-कबाड़,। छंटाई-बिनाई के कार्य करते हैं वह अलग-अलग फैक्ट्रियों से कूड़ा इक्ट्ठा करके टैक्टर द्वारा अपनी झुग्गी के पास लाते हैं, और वहीं उसकी छंटाई-बिनाई करते हैं। इस छंटाई-बिनाई से निकलने वाले कचरे से इनकी झुग्गियों के आस-पास गंदगी पनप रही है।

झुग्गी के पास एक छोटा मैदान है, उस में बारिश होने पर पानी जमा हो जाता है और इसी मैदान में पालतू पशु, जैसे भैंस को स्नान कराया जाता है। इसलिए बदबू पानी कम होने की वजह बढ़ती ही जा रही है। इसी विषय को लेकर पत्रकार ने इस स्थान पर रहने वाले बच्चों तथा माता-पिता से बातचीत की। बातचीत में पता चला कि यह लोग नोएडा में पैसे कमाने के लिए आए हैं। अगर यह लोग बदबू की परवाह करेंगे तो इनके बच्चों का पालन-पोषण कैसे होगा?

13 वर्षीय नबीयून का कहना है कि इस बदबू के कारण हम बच्चों को बहुत सावधानी से रहना पड़ता है, क्योंकि जब हम अपनी झुग्गी से बाहर खाना खाते हैं तो उस खाने पर बहुत सारी मक्खियां बैठ जाती हैं जिससे हम बच्चों को हमेशा डर लगा रहता है कि कहीं हम बच्चे इस गदंगी तथा मक्खियों का शिकर नहीं हो जाएं। माता-पिता का कहना है कि अगर हम अपनी झुग्गी के आस-पास साफ-सथुरा करते भी हैं तो जब फैक्ट्रियों से कूड़ा-कचरा लाते हैं तो साफ-सथुरा किए गए स्थान पर भी कचरा फैला देते हैं जिसकी वजह से हमारी सारी मेहन्त खराब हो जाती है। इस संबंध में बच्चों का सुझाव है कि इस स्थान पर कूड़ा नहीं लाना चाहिए। जो व्यक्ति कूड़ा-कबाड़ा का व्यापार करते हैं, उनको किसी और ख्याली मैदान पर कूड़े की छंटाई-बिनाई करनी चाहिए, ताकि हम सभी बच्चे इस परेशानी से मुक्त हो सकें।



पेड़ के भय से परेशान हैं मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर चांदनी व रिपोर्टर दीपक

शकूर बस्ती में पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया। इस मीटिंग के दौरान सभी बालसाथियों ने अपनी पीढ़ा को बताते हुए कहा कि इस बस्ती में हम बालसाथियों को बहुत डर लगता है; क्योंकि इस बस्ती में 1600 से 1700 से भी अधिक तिरपाल से बनी हुई झुग्गियां हैं। इन झुग्गियों के पास बबूल के बड़े-बड़े पेड़ हैं, जिसमें काफी कांटे होते हैं। कांटों से हम बच्चों को कोई ज्यादा परेशानी नहीं है।

परेशानी तो इस बात की है कि आजकल ठंड की वजह से इन पेड़ों पर काफी कीड़े पनप रहे हैं। वह हमारे घर के अंदर प्रवेश कर जाते हैं। रात को सोते समय हमारे शरीर के ऊपर चढ़ने की संभावना रहती है। बच्चों से ने बताया कि अगर यह कीड़े हमारे शरीर के किसी भी भाग से टच हो जाते हैं, तो वहीं पर यह अपने विषैले पदार्थ छोड़ देते हैं जिसकी वजह से हमारे शरीर में काफी खुजली होती है और खुजली करते वक्त हम बच्चे किसी दूसरे बच्चों को टच करते हैं तो उन्हे भी इसी तरह से रोग हो जाते हैं। खुजली करते करते हमारे शरीर लाल हो जाते हैं और फफोले तक पड़ जाते हैं।

साथ ही बच्चों ने यह भी बताया कि यह जो बबूल के पेड़ चित्र में दर्शार्या गया है, इसमें से काफी पेड़ बूढ़े.हो चुके हैं और इनकी जड़ें कमजोर होती जा रही हैं, या फिर सूखती जा रही हैं। जब तेज हवा चलती है तो इनके गिरने की संभावना हमेशा बनी रहती है कि कहीं यह पेड़ हमारी झुग्गी के ऊपर गिर ना जाए। जैसा कि पहले ही ऊपर बताया जा चुका है कि इस बस्ती में सारी झुग्गी तिरपाल से बनी हुई हैं, अगर किसी वजह से पेड़ का कोई भी भाग इस झुग्गी पर गिरता है, तो झुग्गी के अंदर रहने वाले बच्चे तथा इनके माता-पिता को बहुत ज्यादा नुकसान हो सकता है। इसलिए बच्चे चाहते हैं कि जो पेड़ बूढ़े होते जा रहे हैं, उनको काट दिया जाए, और पेड़ की जो टहलनियां काफी बड़ी हो गयी हैं, उनको काट कर छोटे आकार में कर दिया जाए, ताकि उन पर ना तो कीड़े पनपेंगे और साथ ही झुग्गी पर पेड़ और टहनियों के टूट कर गिरने की संभावनाएं भी कम हो जाएंगीं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

गैरेज मालिक बच्चों से करवाते हैं कीमती पार्ट/पुर्जे चोरी

बातूनी रिपोर्टर शिफा व रिपोर्टर पूनम



आगरा में बसी एक बस्ती, जो राजनगर के नाम से जानी जाती है। राजनगर में रहने वाले कुछ परिवार बहुत गरीब हैं। इसलिए उन बच्चों के माता-पिता तथा बच्चे खुद कड़ी मेहनत करते हैं। राजनगर में दो-तीन बच्चे ऐसे हैं, जिनकी आयु 13 से 14 साल तक है। इन बच्चों को इनके माता-पिता एक गैरेज में काम पर लगा दिया है, जहां छोटी-मोटी स्कूटी तथा मोटरसाईकिल ठीक कराई जाती हैं। इस गैरेज के मालिक का व्यवहार कुछ ठीक नहीं है। इस गैरेज पर काम करने वाले बच्चों से जानकारी मिली कि यह जो मालिक है वह बच्चों को बोलते हैं जितनी भी स्कूटी तथा मोटरसाईकिल ठीक कराने के लिए आएं उनके पार्ट/पुर्जे चोरी छुपे निकाल लिया करो। जब बच्चे इस काम को करने से इंकार करते हैं तो काम करने वाले को मारने-पीटने तथा चोरी का झूठा इल्जाम लगाने की धमकी दी जाती है। इस भय में बच्चे यह काम कर रहे हैं। बच्चों ने बताया कि हमारे मालिक ज्यादातर कीमती पार्ट/पुर्जे निकालने के लिए बोलते हैं। जैसे पेट्रोल बायरिंग आदि। इसके बदले उस गाड़ी में पुराने पार्ट/पुर्जे लगाने के लिए बोलते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चे यह कैसे कर लेते हो, जब गाड़ी का मालिक सामने होता है तो ? बच्चों ने बताया कि हमारे गैरेज में नये पार्ट/पुर्जे नहीं मिलते हैं, इसलिए गाड़ी के मालिक को हमारे मालिक बोलते हैं कि आपकी गाड़ी में इस पुर्जे की आवश्यकता है। आप बाहर से इस पूर्जे को लेकर आईए, तब हम बच्चे उनकी गाड़ी में से नये पुर्जे निकाल लेते हैं और कोई दूसरे ग्राहक आते हैं जिनको इस पुर्जे की आवश्यकता होती है उनकी गाड़ी में काफी कीमतों के साथ लगा देते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आप बच्चे अपने माता-पिता से इस विषय पर चार्च नहीं किए ? बच्चों ने बताया कि जब हम बच्चे अपने माता-पिता से इस विषय में जिक्र किए तो हमारे माता-पिता को यह बात मजाक लगती है कि हम उनसे मजाक कर रहे हैं। हमारे माता-पिता इन बातों को अनदेखा कर रहे हैं। लेकिन हम बच्चों को यह काम करना अच्छा नहीं लगता है। हमें यह काम करते हुए हमेशा भय सताता रहता है कि अगर किसी दिन यह काम करते किसी गाड़ी के मालिक ने देख लिया तो उस दिन हम बच्चों के साथ क्या होगा ?

माता-पिता की लापरवाही से बच्चे बढ़े बालमजदूरी की ओर

रिपोर्टर शम्भू



गुडगांव की एक बस्ती, जिसे बादशाहपुर के नाम से जानते हैं। इस बादशाहपुर के आस-पास लगभग 500 से अधिक झुग्गी-झोपड़ियां हैं। इन झुग्गियों के अंदर एक छोटा सा बाजार भी लगता है जिसमें अधिक संख्या में बच्चे काम करते पाए जाते हैं।

इन बच्चों के काम करने का एक विषेष कारण है। आईए विस्तार से जानते हैं इस कारण को। जब पत्रकार ने इस विषय में छानबीन की तो बच्चों ने बताया कि इस बाजार में काम करना हमारी मजबूरी है; क्योंकि हमारे परिवार बहुत गरीब हैं। इसलिए हमारे माता-पिता खुद कड़ी मेहनत करते हैं लेकिन दुख की बात यह है कि उनकी कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी घर का गुजारा नहीं हो पाता है। इसलिए हमारे माता-पिता हम बच्चों को इस बाजार में सब्जी आदि की दुकानों पर कार्य करने के लिए भेजते हैं।

11 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कंहैया ने बताया कि दुख इस बात का नहीं है कि हमारे माता-पिता सब्जी की दुकान पर काम करने भेज रहे हैं, दुख तो इस बात का है कि दोपहर 2 बजे से लेकर रात को 10 बजे तक हम बच्चों को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है और बदले में सब्जी दुकान के मालिक कभी-कभी हम बच्चों को 10 से 20 रुपए देते हैं और जिस दिन ज्यादा दुकानदारी होती है उस दिन थोड़ी बहुत सब्जियां भी दे देते हैं लेकिन इन सब्जियों तथा 20 रुपए से हमारा घर की परिस्थिति में कोई सुधार नहीं आ रहा है। इसलिए जब हम अपने मालिक से ज्यादा पैसे मांगने की कोशिश करते हैं तो वह हम पर ही गुस्सा हो जाते हैं और कभी-कभी गाली भी देने लगते हैं। दूसरी बात यह है कि हम अपने माता-पिता को समझाते हैं कि हमें इस सब्जी की दुकान पर काम नहीं करना है। लेकिन हमारे माता-पिता को इस परेशानी से कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। क्योंकि हमारे माता-पिता यह सोचते हैं कि हम बच्चे पूरे दिन इधर-उधर घूमते रहते हैं। हम एक दिन भी काम पर नहीं जाते हैं तो हमारे माता-पिता गुस्सा होते हैं। लेकिन हमारे माता-पिता को यह पता नहीं है कि हमारे मालिक हम बच्चों पर किस प्रकार से अत्याचार करते हैं। जब बाजार में सब्जी वाली टेम्पू आती है जब कोई बड़े व्यक्ति बाजार में नहीं होते हैं, तो हमारे मालिक हम बच्चों से ही आलू से भरी बोरी टेम्पू में से उतरवाते हैं जिससे हम बच्चों को बहुत परेशानी हो रही है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

पैसों की लालच में निठल्ले माता-पिता के दुर्व्यवहार की शिकार लड़कियां

रिपोर्टर शम्भू



पत्रकार विजिट के दौरान कुछ ऐसे इलाको में जा पहुंचा जहां ज्यादातर लड़कियां कबाड़ा बीनने का कार्य करती हैं। इन लड़कियों से पत्रकार ने बातचीत करनी चाही, लेकिन यह इतनी डरी हुई थीं कि पत्रकार की बात सुनने के लिए तैयार नहीं थीं। आखिर क्या कारण था, जो यह लड़कियां पत्रकार से बात करना नहीं चाहती थीं। इस बात को जानने के लिए जब पत्रकार ने इर्द गिर्द छानबीन की तो पता चला कि इन लड़कियों के माता.पिता इनसे जबरदस्ती कबाड़ा बिनवाते हैं, और यदि यह किसी लड़के से बात करते हुए दिख जाती हैं, तो इनके माता पिता इन पर अत्याचार करते हैं। इसी भय के कारण यह लड़कियां पत्रकार को देखकर भाग रही थीं। पत्रकार दूसरे दिन फिर उसी स्थान पर जा पहुंचे और फिर इन्हीं लड़कियों से बात करनी चाही तो उन्ही में से एक लड़की बोली कि आप हम लड़कियों से बात क्यों करना चाहते हो ?

पत्रकार ने अपने बारे में जानकारी देते हुए कहा आप लोग डरो मत मैं एक पत्रकार हूं। मैं बच्चों के लिए ही काम करता हूं। तब इन लड़कियों ने पत्रकार के सामने अपनी बातों को विस्तार से बताया कि हमारे माता.पिता बहुत दुष्ट हैं। वे खुद काम नहीं करते हैं। हम लड़कियों से जबरन काम करवाते हैं। अगर हम लड़कियां काम करने के लिए, तैयार नहीं होती है, तो हम पर अत्याचार करते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि हम सभी लड़कियां सुबह सात बजे भूखे पेट घर से निकलती हैं और रात को आठ नौ बजे वापस घर लौटती हैं। इस बीच हम लड़कियां भूंखे पेट कबाड़ा बीनते है। जब हम सभी लड़कियों को ज्यादा तेज भूख लगती है तो हम लोगों से भीख मांगकर खाना खा लेते हैं। अगर इस दौरान हम लड़कियों को घर जाने का मन होता है तो हमारे माता-पिता डांट कर भगा देते हैं। हमारे माता.पिता घर में बैठकर गप्पें मारते रहते हैं। इसी कारण से हम लड़कियां चिंतित हैं कि आखिर हमारे माता.पिता इस तरह का व्यवहार क्यों कर रहे है ? वह खुद भी तो कुछ काम कर सकते हैं लेकिन वह तो कुछ करते ही नहीं पूरे दिन हम लड़कियां किस परिस्थिति से गुजकर कबाड़ा बीनती हैं, इससे उन्हे कोई मतलब नहीं, सिर्फ उन्हें पैसे से मतलब है।

गंदगी से लाचार मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर नासीर व रिपोर्टर दीपक



पत्रकार ने पश्चिम दिल्ली में दौरा किया। दौरे के दौरान पता चला कि शादीपुर में लगभग 700 से अधिक झुग्गी-झोपड़ियां हैं। इन झुग्गी-झोपड़ियों के आस-पास काफी कूड़ा-कचरा फैला हुआ है। इस कूड़ा-कचरा को साफ-सफाई कर्मचारी भी साफ करने नहीं आते हैं। इसका परिणाम इन झुग्गी बस्ती वालों को भुगतना पड़ रहा है। जब पत्रकार इसकी पड़ताल करने शादीपुर पंहुचा तो उसने पाया कि काफी गंदी बदबू आ रही थी। पत्रकार ने बच्चों से बातचीत की कि यह बदबू कहां से आ रही है। कुछ बच्चों ने बताया कि यह बदबू हमारी झुग्गी के पास एक नाला है, उसमें से आ रही है। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि क्या उस नाले की कोई साफ-सफाई नहीं करता है ? बच्चों ने बताया इधर सरकारी कर्मचारी सफाई करने बहुत कम आते हैं। इस कारण हमें इन परेशानियों का समाना करना पड़ता है। लगभग एक-दो सप्ताह के बाद एक बार सफाई करने आते हैं। इस वजह से इस स्थान पर काफी सारे मच्छर पनप जाते हैं और इस स्थान पर रहने वाले बच्चे अक्सर डेंगू का शिकार हो रहे हैं, क्योंकि झुग्गी के सारे बच्चे इसी नाले के पास खेलते हैं, यह मच्छर उनके शरीर पर काट लेते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि क्या आप लोगो ने एम. सी. डी कार्यकर्ता को शिकायत नहीं की ? बच्चों ने बताया कि जब काफी गंदगी हो जाती है तब वह लोग दवाई छिड़काव करने आते हैं, उसका भी कोई प्रभाव नहीं होता है। हम सभी बच्चे चाहते हैं कि एक बार एम. सी. डी कार्यकर्ता अच्छी तरह से हमारी झुग्गियों में सफाई कर दें, ताकि हम बच्चों को इस गंदगी से छुटकारा मिल सके।

आखिर स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को किस बात की सजा?

रिपोर्टर शम्भू



स्टेशन पर रहने वाले बच्चों के साथ पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मीटिंग का आयोजन किया। इस मीटिंग के दौरान सभी बच्चों ने अपने नाम और परिचय कराते हुए कहा कि वर्तमान में हम सभी बच्चे बड़ी मुसीबत में हैं। पत्रकार ने बच्चों से विस्तार से पूछा कि क्या मुसीबत है ? आप हमें भी बताओ। जब आप हमें बताओगे तभी हम इस मुसीबत से बचने का उपाय बता पाएंगे।

16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुलेमान ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि जैसे कि आप सभी जानते हैं कि हम सभी बच्चे अपना पेट पालने के लिए स्टेशन पर रहते हैं। कूड़ा-कबाड़ा चुनते हैं, अपने पेट भरते हैं लेकिन दुख की बात यह है कि यदि स्टेशन पर किसी भी प्रकार की दुर्घटना होती है तो पुलिस वाले भईया हम बच्चों पर ही शक करते हैं और जबरदस्ती हम बच्चों को उठाकर थाने ले जाते हैं, हमारे साथ मारपीट करते हैं। एक बार भी हमारी बातों को सुनने के लिए तैयार नहीं होते हैं कि हम बच्चों ने वह गलतियां की भी हैं या नहीं।

हाल ही में एक घटना घटी है कि एक 21 वर्षीय लड़का जो ड्रग्स का नशा करता था और आस.पास रहने वाले व्यक्तियों के साथ हर वक्त लड़ाई.झगड़ा करता था, उसकी किसी वजह से हत्या हो गयी है। इस वजह से पुलिस वाले भईया ने हम बच्चों का जीना दूभर कर दिया है। उन्हें लगता है कि हम बच्चों ने ही उनकी हत्या की है। इसलिए हम सभी बच्चों को स्टेशन से भगा रहे हैं। रेलगाड़ी के अंदर कबाड़ा भी बीनने नहीं जाने देते हैं। पुलिस वाले भईया के दवाब में हम बच्चों का कामकाज भी बंद हो गया है। हम बच्चों को स्टेशन के अंदर आने जाने नहीं देते हैं। अगर हम बच्चे चोरी छिपे चले भी जाते हैं, तो पकड़े जाने पर बहुत पिटाई होती है। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि पुलिस वाले भईया हम बच्चों के साथ ऐसा वर्ताब ना करें, हमें अपनी बात कहने का पूरा मौका दें। हमारी बातों को पूरी तरह सुनें। जानने की कोशिश करें कि हम बच्चों ने गलतियां की हैं या नहीं ? अगर हम बच्चों से कुछ गलतियां होती हैं, तो उनका पूरा अधिकार है कि बच्चों को सजा दें। विचारणीय बात है कि जब हम बच्चों ने गलतियां की ही नहीं हैं, तो फिर किस बात की सजा दी जा रही है ।





भीख मांगने वाले बच्चों को कैसे मिलेगा माता-पिता का स्नेह

बातूनी रिपोर्टर अमरीता व रिपोर्टर ज्योति

विजिट के दौरान पता चला कि राजधानी दिल्ली में भीख मांगने वाले बच्चों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। इस विषय पर बालकनामा के पत्रकारों ने दौरा कर जानना चाहा कि ये मासूम भीख क्यों मांग रहे हैं ? ऐसी कौन सी मजबूरी है जो इनको भीख मांगने के लिए दूसरे के आगे हाथ फैलाना पड़ता है? आईए विस्तार से इसका कारण जानने की कोशिश करते हैं। 12 बच्चों से मुलाकात करने पर पता चला कि इनके माता पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य इनसे भीख मांगवाते हैं। अगर यह बच्चे भीख मांगने से इंकार करते हैं तो इन मासूमों पर अत्याचार किए जाते हैं। इसी अत्याचार से बचने के लिए यह मासूम राजधानी दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर भीख मांगते हुए पाए जा रहे हैं। जैसे कि लालबत्तीए रेलवे स्टेशनए मंदिरए मस्जिद तथा भीड़भाड़ वाले स्थान। इन मासूमों को पूरे दिन कड़ी मेहन्त करने पर लगभग 300 रुपए तक कमाई हो जाती है। इस दौरान इन बच्चों को किन-किन परेशानीयों से गुजरना पड़ता है वह यह बच्चे किसी को नहीं बताते। 13 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राकेश का कहना है कि पब्लिक भी हम बच्चों से अच्छे से बात नहीं करती। अगर हम उनके पास भीख मांगने के लिए हाथ फैलाते हैं, तो वह हम बच्चों को देखकर भी अनदेखा कर देते हैं। 14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) कंहैया ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहा कि हमारे माता-पिता की हम बच्चों से डिमांड है कि प्रतिदिन 500 रुपए से भी अधिक पैसे कमा कर लाना है। अगर इतने पैसे हम बच्चे कमा नहीं पाते हैं, तो हम पर अत्याचार किए जाते हैं। हम बच्चों को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती है। जिस दिन 500 रुपए तक कमाई नहीं हो पाती है, उस दिन हमारी रात बहुत कठिनाई से गुजरती है। बच्चों का दुख-दर्द सुनते ही पत्रकार इन बच्चों के माता पिता के पास जा पहुंची, और इनसे भी इस विषय चर्चा की कि आप अपने बच्चों से इस तरह का अत्याचार क्यों करते हो ? तो बच्चों के माता-पिता पत्रकार से गलत व्यवहार से पेश आने लगे और बोले कि मैं अपने बच्चों के साथ कुछ भी करूं, तुम्हे उनसे क्या लेना देना ? आस-पास छानबीन करने पर लोगों ने बताया कि यह लोग बच्चों को जन्म इसलिए देते हैं, ताकि यह अपने बच्चों से भीख मांगवा सकें; क्योंकि यह तो कुछ काम करते ही नहीं। सिर्फ अपने बच्चों से काम करवाते हैं। इसलिए इन बच्चों की जनसंख्या बढ़ती जा रही है। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) आंचल का कहना है कि हम सभी बच्चे चाहते हैं कि हमारे माता-पिता में बदलाव आए और वह हम बच्चों के साथ इस तरह का व्यवहार ना करें। हमें भी खेलने को मिलना चाहिए। हम पढ़ना चाहते हैं, ताकि बड़े होकर सम्मान के साथ जीवन जी सकें।

कड़ी मेहनत करने के बाद भी नहीं मिलती है सही तनख्वाह

बातूनी रिपोर्टर भारती व रिपोर्टर पूनम

आगरा में पत्रकारा द्वारा पाया गया कि बच्चे अलग-अलग प्रकार के कामों में लिप्त हो रहे हैं, क्योंकि इनकी पारिवारिक स्थिति इतनी कमजोर है कि अगर यह काम करना बंद कर दें तो इनके घरों में चूल्हा तक नहीं जल पाएगा। इनमें से कुछ मिट्टी के खिलौने बनाने का काम करते पाए गए हैं। कहने और सुनने में तो आसान है कि मिट्टी के खिलौनें तो आसानी से बन सकते हैं लेकिन जितना आप और हम सोच रहे हैं इतना आसान नहीं है। आईए हम आपको विस्तार से जानकारी देते हैं कि मिट्टी के खिलौने बनाने तथा बेचने में बच्चे किन-किन परेशानियों का सामना करते हैं। सबसे पहले जब बच्चे मिट्टी के खिलौने बनाते हैं, तो काली मिट्टी की मरम्मत करनी पड़ती है, जो बच्चे को मालिक लाकर देते हैं। इस मिट्टी की मरम्मत करने के बाद सांचे में डालते हैं, उसके बाद ही खिलौने तैयार हो पाते हैं। इसके बाद बच्चे इस खिलौनों को एक सप्ताह तक धूप में सुखाते हैं। जब तक खिलौने पूरी तरह से सूख नहीं जाते, तब तक बच्चे को काफी निगरानी रखनी पडती है। खिलौने सूख जाने के बाद बच्चे पेन्ट करते हैं, जो मशीन द्वारा किया जाता है। बच्चों ने बताया कि मशीन द्वारा पेंट करते समय हम बच्चों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। पेंट करते समय पेंट का प्रदूषण काफी तेजी से फैलता है जिसकी वजह से हमारी नांक में काफी तेज दर्द होता है। इतनी परेशानियों का सामना करते हुए भी इस खिलौने को तैयार करते हैं। हम बच्चे बाजार तथा मेले में एक पीस 10 से 20 रुपए का सेल करते हैं। इतनी कड़ी मेहनत करने के बाद भी हम बच्चों को प्रतिमाह दो-ढ़ाई हजार रुपये मिलते हैं। अगर किसी दिन हम से खिलौना टूट जाते हैं, या कम सेल होते हैं, तो हमारा मालिक हमें 2500 रुपए भी नहीं देते हैं।



वातावरण के शिकार हो रहे मासूम बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सलमान व रिपोर्टर शम्भू



जैसा कि आप सभी जानते हैं कि हम बच्चे वातावरण को देखकर ही सीखते हैं। हमारे आस.पास क्या चला रहा है ? जो भी अच्छी-बुरी चीजें चल रही होती हैं, वही हम सीखने का प्रयास करते हैं। इस दौरान कुछ अच्छी चींजे भी हमारे अंदर प्रवेश कर जाती हैं और कुछ गंदी चीजें भी। जैसे कि पता चला कि स्टेशन तथा पार्कों के आस-पास कुछ बड़े लड़के तथा लड़कियां संभोग करती हैं। इस दौरान कामकाज करने वाले बच्चे, जो रोजना कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए स्टेशन तथा पार्कों के आस-पास जाते हैं, उन्हें देखकर यह मासूम भी उनके जैसे व्यवहार करते हुए पाए जा रहे हैं। बच्चों द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि रेलवे स्टेशन के पास सफाई लाईन है, जहां काफी देर तक एक रेलगाड़ी खड़ी होती है और इस खाली रेलगाड़ी का फायदा बड़े लड़के तथा लड़कियां उठा रही हैं। यह लोग उस खाली डिब्बे के अंदर नशीले पदार्थ का भी सेवन करते हैं और इस दौरान लड़कियों के साथ संभोग भी किया जाता है। इसके चंगुल में कुछ मासूम बच्चे, जो अपने पेट पालने के लिए उसी सफाई लाईन के पास कबाड़ा बीनने के लिए आती है, उन्हे देखकर यह मासूम बच्चे भी जिनकी 12 से 13 साल तक होगी, वह भी यही कदम उठा रहे हैं। यह बात सुनते ही पत्रकार इन बच्चों के माता-पिता से जायजा लेने के लिए जा पहुंचा। माता.पिता ने बताया कि हमारे बच्चे ऐसे नहीं थे लेकिन उन लड़के तथा लड़कियों की वजह से ऐसा हुआ है। वह लोग तो संभोग करते ही हैं और हर वक्त एक साथ रहते हैं।

अगर उन लड़कियों को लड़का छोड़कर जाने की बात करते हैं, तो लड़कियां अपने हाथ की नस काट लेती हैं और यह सब ड्रामा बच्चों के सामने किया जाता है। हम चाहते हैं कि स्टेशन तथा पार्कों में इस तरह की हरकतें करने वालों पर सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए। उन्हें वहां से भगाया जाना चाहिए, ताकि हमारे मासूम बच्चे इस तरह की गंदी हरकतों से बच सकें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

अत्याचारों के भय से नाम छुपाने को विवश सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर सलमान व रिपोर्टर शम्भू



बालकनामा की पत्रकार टीम ने दौरा कर जानना चाहा कि आखिर सड़क एवं कामकाजी बच्चों को नाम पूछने पर वह हर व्यक्ति को गलत नाम क्यों बताते है ? आईए विस्तार से जानने का प्रयास करते हैं। ऐसी क्या वजह है, जो हर एक सड़क पर रहने वाला बच्चा अपना गलत नाम इस्तेमाल करता है ? सबसे पहले आपको बता दूं कि इस जानकरी के प्राप्त करने के लिए दिल्ली के विभिन्न स्थानों में पत्रकार टीम ने दौरा किया। जहां अधिक संख्या में सड़क एवं कामकाजी बच्चे पाए जाते हैं, वहां बच्चों के साथ बैठक करने पर पता चला कि यह बच्चे पूछने जाने पर अपना गलत नाम इसलिए बताते हैं, ताकि इन्हें किसी भी तरह की परेशानी ना हो। क्योंकि यह बच्चे अपना पेट पालने के लिए स्टेशन तथा बस अड्डा के इर्द-गिर्द काम करते हैं और वही रहते हैं। अगर किसी व्यक्ति को इन बच्चों ने अपना असली नाम बताया कि तो यह किसी भी मुसीबत के शिकार हो सकते हैं। जैसे कि स्टेशन पर रहने वाले बच्चों ने बताया कि भईया हम बच्चे स्टेशन पर रहते है और इस स्टेशन पर बहुत ऐसे लोग हैं, जो जेब काटने तथा चोरी के कार्य करते हैं अगर उन्हें हम अपने असली नाम बताते हैं तो वह चोरी करेगें और नाम हम बच्चों का लगा देगे। 17 वर्षीय अजीत का कहना है कि कुछ बच्चे जो अपने घर का वातावरण खराब होने की वजह से स्टेशन पर भागकर आ जाते हैं, अगर हम स्टेशन पर असली नाम से जाने जाएंगे तो वहलोग हमें दोबारा घर ले जाकर हम बच्चों पर अत्याचार करेंगे। इसलिए हम बच्चे अपने असली नाम को गुप्त रखते हैं। बच्चों ने अपना सुझाव रखते हुए कहा कि ऐसा भी नहीं है कि हम किसी को अपना असली नाम नहीं बताते हैं। जिन व्यक्ति पर हम बच्चे विश्वास रखते हैं, उनको ही हम अपना नाम बताते हैं, ताकि हम सभी सड़क एवं कामकाजी बच्चे सुरक्षित रहें।

बड़े व्यक्तियों के व्यवहार से लाचार लड़कियों ने छोड़ा स्कूल

बातूनी रिपोर्टर आशीका व रिपोर्टर चेतन

बड़े ही दुख की बात है कि कितनी मुश्किल से माता-पिता अपनी बेटियों को स्कूल में दाखिला करवाते हैं लेकिन कुछ ऐसी परिस्थिति आ जाती हैं जिनकी वजह से मजबूरन उनको अपनी बेटियों के स्कूल जाने पर रोक लगानी पड़ती है। विजिट के दौरान पत्रकार टीम ने पाया कि एक स्थान जिसका नाम गुप्त रखा गया है उस स्थान पर काफी सारी लड़कियां स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं हैं। आखिर ऐसा क्यों है? आईए जानते हैं। भूतकाल में सभी लड़कियां कूड़ा-कबाड़ा बीनती थीं। इनको समाजिक संस्था के सहयोग से सरकारी स्कूल में दाखिला मिला। कुछ ही महीनों के बाद लड़कियां स्कूल जाने से खुद मना करने लगीं। पत्रकार उन लड़कियों से जाकर मिला, जो स्कूल जाने से मना कर रही हैं। इन्ही में से 10 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल जो 5वीं कक्षा में पढ़ाई करती है ने बताया कि स्कूल जाने में हम लड़कियों को कोई आपति नहीं है लेकिन हमें जो परेशानी हो रही है उसे कोई सुनने के लिए तैयार नहीं हो है, इसलिए हम हमें मजबूर होकर स्कूल जाना त्यागना पड़ रहा है। पत्रकार ने जब अन्य लड़कियों के साथ बातचीत की तो 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) राधा ने बताया कि जब हम स्कूल के लिए निकलते हैं, तो रास्ते में कुछ बड़े लड़के हम लड़कियों को परेशान करते हैं और हमें देखकर अश्लील बातें भी बोलते हैं, जोर-जबदस्ती भी करते हैं, इसलिए हम लड़कियां स्कूल जाने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं। लड़कियों ने बताया कि हमने अपने माता-पिता को भी बताया लेकिन वह लोग हमारे माता-पिता से भी गाली-गलौज से बात करने लगे। जब हम स्कूल अध्यापक को बोलते हैं, तो अध्यापक हमारी बातो को सुनते ही नहीं हैं। अध्यापक जी बोलते हैं कि वह लोग कुछ भी बोलें उससे तुम्हें क्या परेशानी है ? उन्हें बोलने दो, तुम सिर्फ पढ़ाई से मतलब रखो। लेकिन हम लड़कियों को डर लगा रहता है कि आते-जाते समय हमारे साथ गलत न हो जाए। इसी तरह का भय हमारे माता-पिता को भी सता रहा है, इसलिए स्कूल नहीं भेज रहे हैं। पढ़ना हमें बहुत अच्छा लगता है। पढ़ कर हम अपना जीवन संवारना चाहती हैं। हम चाहती हैं कि हमें और हमारे माता-पिता को भयमुक्त वातावरण दिया जाय, ताकि हम लड़कियां भी पढ़ सकें और सम्मानित जीवन जी सकें।

क्यों करते हैं हमारे साथ इस तरह का व्यवहार ?

बातूनी रिपोर्टर दिलशाद व रिपोर्टर शम्भू

नोएडा एक ऐसा स्थान है जहां आये दिन फैक्ट्रियां तथा बिल्डिंग बनती रहती हैं, जिसका परिणाम इन मासूम बच्चे तथा इनके परिवार वालों को भुगतना पड़ता है। हाल ही में पता चला कि लगभग 300 झुग्गी-झोपड़ी तोड़ दी गयी हैं। इस झुग्गी में रहने वाले माता-पिता ने बताया कि हमलोग इस स्थान पर लगभग 10.12 साल से रह रहे हैं। कुछ दिन पहले अचानक एक नोटिस आया कि हमलोगों की झुग्गी टूटने वाली हैं। यह खबर सुनते ही हमलोगों के होस उड़ गए कि अब क्या होगा ? कहां जाएंगे ? हम अपने बच्चों को लेकर इसी चिंता में इस नोटिस के साथ अपने ठेकेदार के पास पहुंचे। उन्होने भी मदद नहीं की। सारी झुग्गी तोड़ दी गयी हैं। हम अपने बच्चों को लेकर अलग.अलग स्थान पर भटक रहे हैं। हम में से लगभग 42 परिवार अपने गांव चले गए हैं और कुछ नोएडा के इर्द-गिर्द, जो जंगल झाड़ है, उसको साफ. सथुरा करके नयी झुग्गी बना रहे हैं। 27 वर्षीय (परिवर्तित नाम) श्रीमती फूलन देवी जी का कहना है कि अकसर देखा गया है कि जिस जंगल को हमलोग साफ. सथुरा करके अपने रहने के लिए झुग्गियां बनाते हैं, उसी स्थान के लिए सरकार नोटिस भेज देती है कि इस स्थान को खाली करना है। इस समस्या को लेकर हम बहुत चिंतित हैं। बच्चों से बातचीत करने पर 11 वर्षीय दिलशाद ने बताया कि इन झुग्गियों में लगभग 50.60 बच्चे थे, जो स्कूल भी जाते थे लेकिन झुग्गी टूटने की वजह से सारे बिछड़ गए हैं। अब हम सभी बच्चे का स्कूल जाना भी बंद कर दिया गया है। अब हम अपने माता.पिता को नयी झुग्गी बनाने में हाथ बटा रहे हैं। 12 वर्षीय करन का कहना है कि आखिर हमारे साथ इस तरह का व्यवहार क्यों किया जा रहा है ? हम सभी बच्चे चाहते हैं कि जब भी सरकार हमारी झुग्गी तोड़ने का नोटिस भेजती है, तो हमारे रहने के लिए कहीं सुरक्षित स्थान पर प्रबंध करे, ताकि हम बच्चों को एक दूसरे से बिछड़ना ना पड़े और हमारी पढ़ाई का भी नुकसान न हो।

माता-पिता की बेरोजगारी के चलते बालमजदूरी की ओर बढ़ रहे बच्चे

रिपोर्टर ज्योति



बिहार के आरा जिले से आए हुए कुछ परिवार, जो फ्लाईओवर के नीचे रह रहे हैं। जब पत्रकार ने इन परिवारों से मुलाकात की, तो इन्होंने बताया कि हमारे गांव में अति गरीबी होने के कारण हमलोग इस स्थान पर आ गए हैं, ताकि हमलोगों को कमाई का जारिया मिल सके और हम अपने बच्चों की अच्छे से परवरिश कर सकें। इनमें से कुछ परिवार मजदूरी के कार्य करते हैं। कुछ कूड़ा कबाड़ा बिनाई छंटाई का कार्य करते हैं। यह सभी काम करने के बावजूद भी इनको इतना पैसा नहीं मिल पाता कि यह फ्लाईओवर के नीचे रहना छोड़कर एक अच्छा मकान किराए पर लेकर रह सकें। इन सभी परिवार वालों को एक दिन काम मिलता है और पांच दिन बिना काम के ही बैठना पड़ता है। इस परिस्थिति से जूझते हुए ये अपने बच्चों को भी बालमजूदरी का शिकार बना रहे हैं। इनके छोटे.छोटे मासूम बच्चे भी लालबत्ती तथा बाजार में कलम का काम करते हुए पाए जा रहे हैं। इसी विषय को लेकर पत्रकार बच्चों तक जा पहुंचा और बच्चों से बातचीत की कि आपको यह काम करने में कैसे लगता है ? 12 वर्षीय (परिवर्तित नाम) काजल ने बताया कि जब हमारे माता. पिता को किसी प्रकार का काम नहीं मिल रहा है, तो मजबूरी में हम बच्चों को काम तो करना ही पड़ेगा। अगर हम बच्चे काम नहीं करेंगे, तो दिल्ली जैसे राजधानी शहर में भूखे ही रहना पड़ेगा। बिहार से आए हुए जो बच्चे फ्लाईओवर के नीचे रह रहे हैं, उन सभी बच्चों की पढ़ाई में काफी रूची देखी गयी है। अगर इन बच्चों का परिवारिक सहयोग किया जाए तो यह अपने आगे बढ़ सकते हैं। अपने भविष्य को संवार सकते हैं।

हम सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी खेलना चाहते हैं पार्क में

बातूनी रिपोर्टर निलेश व रिपोर्टर शम्भू



नोएडा में रहने वाले बच्चों के साथ एक बैंठक की गई। इस बैठक के दौरान बच्चों नं अपनी परेशानियों का जिक्र करते हुए कहा कि नोएडा सैक्टर 05 के आस-पास काफी पार्क हैं इन पार्क में अच्छे घर के बच्चे खेलते हुए पाये जाते हैं, मगर सड़क एवं कामकाजी बच्चे उस की ओर देखते भी हैं तो पार्क की देखरेख करने वाले व्यक्ति इन बच्चों को मारने के लिए दौड़ते हैं। इसलिए यह कामकाजी बच्चे उस पार्क में खेल नहीं पा रहे हैं। बच्चों का मानना है कि हम सभी बच्चे पूरे दिन कूड़ा-कबाड़ा बीनते हैं, इस वजह से हम बच्चे गंदे दिखते हैं, इसलिए हमारे साथ इस तरह का व्यवहार किया जा रहा है। एक सप्ताह पहले की बात है कि एक सामाजिक संस्था के कार्यकर्ता इन बच्चों को पार्क में खिलाने के लिए लेकर गए, तो पार्क की देखरेख करने वाले व्यक्ति कार्यकर्ता के साथ गलत व्यवहार से पेश आने लगे और बोलने लगे कि अगर आप इन बच्चों को इस पार्क में खिलाना चाहते हो तो आपको मेरे सीनियर से इजाजत लेनी होगी, तभी आप इन बच्चों के साथ इस पार्क में प्रवेश कर सकते हो। यह बात सुनते ही कार्यकर्ता उनकी सीनियर के पास पंहुचे, परन्तु उस दिन इनके सीनियर से मुलाकात नहीं हो पाई। बच्चों का कहना है कि इसी वजह से हमारे खेलने के अधिकार का हनन हो रहा है। हम बच्चे चाहते हैं कि हमारे साथ इस तरह का व्यवहार ना किया जाए। हम सड़क एवं कामकामजी बच्चों को भी इस समाज में सुरक्षित रहने का अधिकार है। सरकार और स्थानीय प्रशासन हमें हमारे अधिकार दिलाये और हमें इन पार्कों में खेलने की इजाजत दिलाये। हम बच्चे भी देश के लिए खेलना चाहते हैं, देश का नाम ऊँचा करना चाहते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

क्या आएंगे कार्यकर्ताओं में बदलाव ?

बातूनी रिपोर्टर सलमान व रिपोर्टर शम्भू

रेलवे स्टेशन पर विजिट करने के दौरान बच्चों द्वारा जानकारी प्राप्त हुई कि कई सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ता स्टेशन पर कार्य करते हैं। वह स्टेशन पर रहने वालों को बहुत परेशान कर रहे हैं। आईए विस्तार से जानने की कोशिश करते हैं इसकी सच्चाई। स्टेशन पर रहने वालों ने बताया कि इस स्टेशन पर काफी सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ता कार्य करते हैं। इनका कार्य होता है, जो बच्चे घर से भागकर आ गए हैं, उन बच्चों को शेल्टर तंथा उनके घर पहुंचाना। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं हो रहा है। कार्यकर्ता अपने स्वार्थ के लिए स्टेशन पर रहने वाले बच्चों को इस्तेमाल करते हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सागर का कहना है कि कार्यकर्ताओं से टारगेट दिया गया है कि प्रतिदिन पांच केस खोजना ही है। अगर किसी दिन एक भी केस नहीं मिलता है, तो यह जो स्टेशन पर जो बच्चे रह हैं और घूमते हुए पाए जाते हैं, उनको यह अपना शिकार बनाते हैं। इन बच्चों पर झूठा



इल्जाम लगाते हैं कि यह बच्चा अपने घर से भागकर आया है। झूठी केस स्टडी बनाकर उसे सी डब्लू सी में पेश कर देते हैं। जब बच्चे इन कार्यकर्ताओं से कुछ बोलने की कोशिश करते हैं तो कार्यकर्ता इन मासूम बच्चों को डांटने लगते हैं। इसी भय में इन मासूमों को कार्यकताओं के अत्याचार सहने पडते.हैं। इस वजह से स्टेशन पर रहने वाले बच्चे दुखी हैं और बोल रहे हैं कि आखिर वे हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं। 16 वर्षीय (परिवर्तित नाम) सुलफाम ने बताया कि भईया कभी. कभी झुग्गी-झोपड़ी के बच्चे स्टेशन से होकर राशन की दुकान पर जा रहे होते हैं, उन बच्चों को भी यह कार्यकर्ता अपने शिकंजे में फंसा लेते हैं। 17 वर्षीय (परिवर्तित नाम) किशन ने बताया कि हम सभी बच्चे चाहते हैं कि इस खबर को पढ़कर उन सभी कार्यकर्ताओं में बदलाव आए और हम जैसे बच्चे के साथ इस तरह का व्यवहार ना करें तथा हम बच्चों को आगे बढ़ने में सहयोग करें।

बाबा ने फैलाया आत्मा का मायाजाल

रिपोर्टर पूनम

लालडग्गी के एक सरकारी स्कूल में पाया गया कि बुरी आत्मा का साया है, जो भी उस स्कूल में पढ़ाई करने के लिए जाते थे, वह वर्तमान में उस स्कूल के नाम सुनकर ही डरते हैं। जानकारी मिली कि भूतकाल में कुछ संस्थाओ के सहयोग से जिन बच्चों का स्कूल में दाखिला हुआ था वे बच्चे कामकाजी थे। इनके माता-पिता काम छुड़वाकर स्कूल भेजना नहीं चाहते थे लेकिन संस्था के कार्यकर्ता के सहयोग से इन बच्चों के माता-पिता तैयार हुए और इन बच्चों का स्कूल में दाखिला हुआ। एक वर्ष तक इन बच्चों ने अच्छे से पढ़ाई-लिखाई की और अच्छे मार्क्स से पास हुए।



इस बुरी आत्मा के साये के बारे में दो-तीन माह से कुछ ज्यादा ही चर्चा हो रही है। जब पत्रकार ने बच्चों से बातचीत की तो पता चला कि एक दिन एक छोटे बच्चे को शौचालय जाने पर चक्कर आ गया और वहीं बेहोश हो गया। इस बच्चे के माता-पिता ने इस बच्चे को डाक्टर को दिखाया लेकिन डांक्टर ने बताया कि आपके बच्चे को कुछ नहीं हुआ है। वह सही है फिर भी इस बच्चे के माता-पिता को यह संदेह हो रहा था कि कहीं मेरे बच्चे को किसी की नजर तो नहीं लग गयी है। यह जानकारी पाने के लिए माता-पिता एक बाबा के पास पंहुचा, जो झाड़फूंक का कार्य करते हैं। उस बाबा को सारी परेशानी बताने के बाद बाबा ने बताया कि उस सरकारी स्कूल में बुरी आत्मा का साया है। इसलिए तुम्हारा बच्चे बेहोश हो गया था। यह बात सुनकर माता-पिता व बच्चे डर गए हैं। 14 वर्षीय (परिवर्तित नाम) रोहित का कहना है कि हममें से कुछ बच्चों का मानना है कि उस स्कूल में कोई आत्मा नहीं है। यह सब बाबा का मायाजाल है, जो हमारे माता-पिता तथा बच्चों को डरा रहा है, ताकि उनको कमाई का जरिया मिल सके ।

निठल्ले एवं क्रूर माता-पिता पर कार्यवाही चाहते हैं बच्चे

रिपोर्टर चेतन

मायापुरी में की एक बस्ती में पाया गया कि कुछ माता-पिता ऐसे हैं, जो अपने बच्चों से अलग-अलग तरह से भीख मांगवाने का कार्य करवाते हैं। जैसे बंदरों का खेल दिखाकर भीख मांगना। यह बात जब पत्रकार को पता चली तो पत्रकार उन बच्चों से खुद जाकर मिला। उन बच्चों से सच जानने की कोशिश की कि आखिर इनके माता-पिता क्यों भीख मांगवाने के लिए भेजते हैं ? जब पत्रकार बच्चों से बताचीत करा रहा था तो बच्चे काफी डर रहे थे कि यह कौन है ? हम बच्चों से इस तरह से बात क्यों कर रहे हैं ? लेकिन जब पकत्रार ने अपने बारे में जानकारी देते हुए कहा कि मैं एक पत्रकार हूं जो आप जैसे बच्चे के लिए कार्य करता हूं और आप जैसे बच्चों को मदद करता हूं तो यह सुनकर बच्चे काफी प्रस्सन हुए और पत्रकार से अपनी परेशानी खुलकर रखी। हमारे माता-पिता हम बच्चों पर बहुत अत्याचार करते हैं, इसलिए मजबूरी में हम बच्चे सुबह 6 बजे से लेकर रात को 8 बजे तक भीख मांगने के लिए आते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आपके माता-पिता आप बच्चों से ही काम क्यों करवाते है ? बच्चों ने बताया कि हमारे माता-पिता कोई काम नहीं करते हैं सिर्फ नशे में धुत रहते हैं। इसके अलावा कोई कार्य नहीं करते हैं। इनको तो इस बात की भी कोई भनक नहीं है कि हम बच्चे पूरे दिन किस प्रकार से भीख मांगते हैं ? पब्लिक हम बच्चों से किस प्रकार से व्यवहार करती है ? इस सब परेशानी से उन्हें कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। उनको सिर्फ पैसों से मतलब है। कैसे भी करके इनको शराब पीने के लिए पैसे लाकर दो नहीं तो यह लोग हम बच्चों पर अत्याचार करते हैं। बच्चों ने अपनी परेशानी बताते हुए कहा कि ऐसे ही एक बच्चा है जो मायापुरी फ्लाईओवर के नीचे भीख मांगता है, वह दोनों पैरो से लाचार है, बोल भी नहीं सकता। उस बच्चे के माता-पिता का व्यवहार ठीक इसी तरह है जिस तरह हमारे साथ हो रहा है। उसके माता-पिता सुबह फ्लाईओवर के नीचे बिठा देते हैं और वह बच्चा भूखे प्यासे पूरे दिन भीख मांगता रहता है। अगर उसे कोई कुछ खाने-पीने के लिए दे जाता है तो खा लेता है, नहीं तो ऐसे ही भूखे पेट रहता है। इतना ही नहीं जब उसे शौच आता है तो वह बच्चा वहीं कर लेता है। इस वजह से बहुत से ऐसे लोग हैं जो उस बच्चे के पास जाना पसंद नही करते हैं। सिर्फ रात को उनके माता-पिता आते हैं, उसे उठाकर ले जाते हैं। इसलिए हम बच्चे चाहते हैं कि हमारे माता-पिता के खिलाफ कुछ ऐसी कार्यवाही करनी चाहिए कि हम बच्चों से भीख मांगवाना भुल जाएं।

क्या बच्चों की पीड़ा सुनेगी पुलिस ?

बातूनी रिपोर्टर विकास व रिपोर्टर ज्योति

निजामुददीन की एक बस्ती, जिसका नाम गुप्त रखा गया है। इस बस्ती में रहने वाले माता-पिता दूसरे के घरों में काम करने के लिए जाते हैं और इनके बच्चे छोटे बच्चों को सम्भालते हैं। इनमें से कुछ बच्चे स्कूल तथा कूड़ा कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं। इन बच्चों के गंदे वस्त्र देखकर कुछ बड़े व्यक्ति, जो इस बस्ती के बाहर जुआ व नशा करते हैं, वह जबरन इन मासूमों से नशा मांगवाते हैं। जैसे कि तंबाकू. सिगरेट. पानी की बोतल तथा ग्लास। जब यह बच्चे इनलोगों को सामान लाने से इंकार करते हैं तो यह बड़े व्यक्ति इन बच्चों पर अत्याचार करते हैं। पाया गया कि यह लोग पहले बच्चों को मारते-पीटते हैं और जब इन बच्चों के माता-पिता काम पर से घर लौटते हैं तो उन से झूठ बोलते हैं कि आपके बच्चे नशा कर रहे थे। जब हमने बच्चों को समझाने की कोशिश की तो मुझसे ही लड़ पड़े। इसलिए मैंने मारा है। यह बात सुनकर माता-पिता भी बच्चों को घृणा की नजरों से देखने लगे हैं। 15 वर्षीय (परिवर्तित नाम) विशाल का कहना है कि जब हम बच्चे किसी प्रकार



के नशीले पदार्थ का सेवन नहीं करते हैं, तो यह लोग हम बच्चों पर इतने अत्याचार करते हैं। जब हम बच्चे नशा करने लगेंगे तो इन परेशानियों से छुटकारा मिल जाएगा। पत्रकार ने बच्चों को समझया कि आप बच्चे यह गलत सोच रहे हो। ऐसा कभी मत करना। नशा बहुत गंदी चीज है। आप इस गंदी लत में पड़ गए तो आपकी जिंदगी खराब हो सकती है। पत्रकार ने खुद माता-पिता को समझाने का निर्णय लिया। लेकिन बच्चे चाहते हैं कि इनकी बस्ती में कोई भी व्यक्ति नशा न करे, ताकि बच्चों पर गलत प्रभाव न पड़े। बच्चों का सुझाव है कि इस बस्ती में हमेशा पुलिस की विजिट होनी चाहिए, ताकि पुलिस के भय से यह लोग नशा न करें।

कैसे होगा दिलदार का सपना साकार ?

बातूनी रिपोर्टर दिलदार व रिपोर्टर शम्भू

11 वर्षीय दिलदार भूतकाल में अपने परिवार के साथ बंगाल में रहता था लेकिन अति गरीबी होने की वजह से दिलदार को अपने पिता के साथ नोएडा आना पड़ा और बालमजदूरी के शिकंजे में लिप्त होना पड़ा। पत्रकार द्वारा जानकारी मिली कि दिलदार के परिवार में कुल 12 सदस्य हैं जिसमें सिर्फ तीन कमाने वाले हैं। दिलदार ने बताया कि जब मेरा पिता नोएडा आया था तब मेरा स्कूल में दाखिला भी करवाया था लेकिन घर की स्थिति खराब होने की वजह से स्कूल त्यागना पड़ा। वर्तमान में दिलदार गुटखा तंथा पान की छोटी दुकान अपनी झुग्गी के बाहर लगाता है। इससे थोड़ी बहुत कमाई हो जाती है दिलदार ने अपने बारे में जिक्र करते हुए कहां कि मेरे पापा सुबह मंडी से पान के पत्तियां खरीद कर ला देत हैं और मैं पूरे दिन इसे बेचता रहता हूं। मम्मी कोठियों में काम करने जाती है, जिससे प्रतिमाह तीन हजार रुपए मिल जाते हैं। दिलदार ने बताया कि कभी-कभी मेरे पिता काम करने के लिए जाते हैं और कभी नहीं भी जाते हैं। परिवार में ज्यादा सदस्य होने की वजह से मेरी मम्मी तथा मुझे कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, ताकि हमारे छोटे-छोटे भाईयों-बहनों को भूखे ना रहना पड़े। इतनी परेशानी से गुजरने के बाद भी दिलदार पढ़ाई करने का ख्वाब देख रहा है। दिलदार ने बताया कि जब हम गांव से आए थे तो 2 माह तक मैं प्रतिदिन स्कूल गया। तब मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। मैं सोच भी रहा था कि अब मेरा भविष्य बन जाएगाा। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं हुआ। अब मैं दोबारा स्कूल जाकर शिक्षा प्राप्त करना चाहता हूं लेकिन यह सपना तब पूरा होगा, जब कोई भाई या दीदी हमारे परिवार को मदद करने के लिए आगे आएंगे।

बालकनामा और बढ़ते कदम सुर्खियों में

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...



बलिकाओं ने सीखा स्वयं की रक्षा करना



लीडरो के बीच कराई गई कोर कमेटी मीटिंग



बच्चो ने दी बधाईयां क्रिसमस पर



बच्चो की दोस्त बनी पुलिस बाल दिवस के शुभ अवसर पर



बालकनामा के पत्रकारो ने प्रशिक्षण द्वारा बताया कैसे बने बातूनी रिपोर्टर



पत्रकारो के साथ आए नज़र महिला एवं बाल विकास के राज्य मंत्री श्री डॉ विरेन्दर कुमार

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूज़लेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471